

कोश—एक परिचय

इस पाठ में...

- ▶ शब्दकोश
- ▶ विश्वकोश
- ▶ साहित्य कोश



अदृश्य की आड़ के पीछे छिपी हैं कुछ ऐसी सुर्यों, जो अपने गुप्त रास्तों से शब्दों की जन्मकथा तक ले जाती हैं।

—राजेश जोशी
हिंदी कवि



कुछ पढ़ते समय जब किसी शब्द का अर्थ अथवा उसका संदर्भ आपके ज्ञान में स्पष्ट नहीं होता तब आप क्या करते हैं? ज़ाहिर है आपके मन में फ़ैरन शब्दकोश का ध्यान आता होगा। चंद्रिका भी आपकी तरह परेशान हुई। आइए जानें कि उसकी समस्या कैसे हल हुई।

पढ़ते-पढ़ते चंद्रिका को ऐसा लगा जैसे स्वादिष्ट भोजन करते हुए दाँतों के बीच अचानक एक कंकड़ी आ फँसी हो। सारा मज़ा किरकिरा हो रहा था। चंद्रिका गरमी की छुट्टियों के दौरान घर में लेटी किसी और ही दुनिया की सैर कर रही थी लेकिन अचानक वहाँ से वापस लौटना पड़ा। समस्या के समाधान के लिए वह लता दीदी के कमरे में भागी लेकिन वह भी कहीं बाहर गई हुई थीं।

चंद्रिका के लिए अब कोई चारा नहीं था। जिस उपन्यास के काल्पनिक जगत का वह आनंद ले रही थी अब उसे आगे पढ़ने की इच्छा नहीं हो रही थी। उपन्यास पढ़ते-पढ़ते खाने में कंकड़ी की तरह एक शब्द अचानक बीच में आकर उसके आनंद में खलल डाल रहा था। शब्द का अर्थ चंद्रिका को पता नहीं था। बगैर अर्थ जाने वह आगे बढ़ना नहीं चाहती थी, मानो कोई ब्रेक लग गया हो।

शब्द था—विदग्ध। यह शब्द उसका मुँह चिढ़ा रहा था और यह पराजय भाव चंद्रिका को स्वीकार्य नहीं था।

लेटे-लेटे वह इसी शब्द के बारे में सोचने लगी। सोचते-सोचते उसे ऐसा लगा जैसे सामने खिड़की से कोई छाया-सी अंदर आई और उसके सामने खड़ी हो गई।

अरे! यह तो कोई परी है। चंद्रिका उसे देखकर चौंकी। थोड़ी घबराई थी। मगर तुरंत ही उसने स्वयं को संभाल लिया। साहस बटोर कर उसने परी से पूछा—“तुम कौन हो और यहाँ किसलिए आई हो?”।

“मैं चंद्रिका हूँ। शब्दलोक से आई हूँ”।

“मगर चंद्रिका तो मेरा नाम है”।

“हाँ! मैंने ही तुम्हें अपना नाम उधार दिया है। घबराना मत। मैं इस बात की कोई फ़ीस या किराया नहीं लेती”, शब्दपरी चंद्रिका हँसते हुए परिहास के स्वर में बोली।

“और हाँ! मैं तुम्हारी समस्या भी सुलझा सकती हूँ। विदग्ध भी मेरे लोक में ही रहता है। बहुत अच्छा लड़का है। मैं उससे तुम्हारी दोस्ती करा दूँगी। इसके बाद वह तुम्हें कभी परेशान नहीं करेगा।”

चंद्रिका ने शब्दपरी से कहा—“मगर तुम्हारे लोक के जो दूसरे निवासी हैं वे तो मुझे परेशान करते रहेंगे।”

शब्दपरी बोली—“मैं तुम्हें अपने लोक के सारे रहस्य समझा दूँगी। फिर तुम्हें कोई कठिनाई नहीं होगी। मेरे लोक के समस्त निवासी तुम्हारे मित्र बन जाएँगे। चलो, मैं तुम्हें अपने लोक में ले चलती हूँ।”

“मगर मैं चलूँगी कैसे? मेरे पास तो तुम्हारी तरह पंख हैं नहीं।” —चंद्रिका ने थोड़ा आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा।

“चिंता मत करो। मैं तुम्हारे लिए फूलों का रथ लेकर आई हूँ। चलो चलते हैं।”—चंद्रिका अपनी हमनाम शब्दपरी के साथ फूलों के रथ पर कुछ समय तक उड़ती रही। अब फूलों का रथ एक विशाल नगर के ऊपर था। चंद्रिका ने रथ से नीचे देखा। नगर की विशेषता यह थी कि इसमें एक अत्यंत प्रशस्त राजमार्ग था और सारे भवन इस राजमार्ग के एक ही तरफ़ पंक्तिबद्ध रूप में निर्मित थे। राजमार्ग के दूसरी तरफ़ कुछ भी नहीं था।

“हमारे लोक में नागरिकों को शब्द कहा जाता है। यह एक आदर्श लोकतंत्र है और यहाँ सभी शब्द समान हैं। कोई छोटा-बड़ा नहीं, कहीं ऊँच-नीच नहीं। यहाँ इतनी सुंदर व्यवस्था है कि किसी राजा या शासक की ज़रूरत भी नहीं होती।”

“कौन-सा शब्द इस राजमार्ग के किनारे कहाँ रहेगा, इस बात पर क्या कोई विवाद नहीं होता?” चंद्रिका ने पूछा।

शब्दपरी बोली—“हमने इसके लिए नियम निर्धारित कर रखे हैं। हर शब्द अनुशासन का पक्का है। बिना किसी बलप्रयोग के वह अपनी जगह खुद ले लेता है। जब किसी नए शब्द को यहाँ की नागरिकता मिलती है तो वह भी यहाँ के नियमों के आधार पर ही इस राजमार्ग के किनारे अपनी जगह ले लेता है। यहाँ के भवन भी ऐसे हैं कि वे थोड़ा-थोड़ा आगे खिसक कर नए शब्द को उसका सही स्थान अपने आप दे देते हैं।”

चंद्रिका की अगली जिज्ञासा थी—“नए शब्दों को आपके लोक की नागरिकता क्या आसानी से मिल जाती है?”

शब्दपरी ने गर्वभाव से कहा—“नागरिकता के लिए तो हज़ारों शब्द कोशिश करते हैं मगर वह इतनी आसानी से नहीं मिलती। जब तक किसी शब्द और उसके अर्थ या अर्थों को तुम्हारे समाज की मान्यता नहीं मिल जाती तब तक हम अपने लोक में उसे प्रवेश की भी अनुमति नहीं देते, नागरिकता तो दूर की बात है। हमारे लोक की नागरिकता एक बहुत बड़ा सम्मान है, जिसके लिए ‘शब्दों’ को लंबे समय तक कोशिश करनी होती है।”

रथ नीचे उतरा और शब्दलोक के प्रवेश द्वार से होता हुआ राजमार्ग पर धीरे-धीरे चलने लगा। चंद्रिका ने पूछा—“शब्दपरी, तुम्हारे लोक की आबादी क्या होगी?”

“अभी तो हमारे लोक की आबादी लगभग पाँच लाख है। जैसा कि मैंने तुम्हें बताया, हमारे लोक में नए शब्द भी जुड़ते रहते हैं।”

शब्दपरी ने आगे कहा—“जिस प्रकार तुम्हारी पृथ्वी पर नए नगरों को योजनाबद्ध ढंग से खंडों और उपखंडों में बाँटा जाता है और फिर हर मकान को एक संख्या प्रदान करते हैं उसी प्रकार हमारे लोक को भी पहले खंडों में बाँटा गया है और फिर उस खंड में हर शब्द के भवन को हमारे नियम के अनुसार क्रमवार व्यवस्थित किया गया है।” चंद्रिका का अगला सवाल था—“यहाँ खंडों का नामकरण कैसे करते हैं?”

यहाँ खंडों के नाम वर्णमाला के अक्षरों पर रखे गए हैं। जैसे, ‘क खंड’ ‘च खंड’ ‘प खंड’ आदि। इन खंडों का क्रम भी वर्णमाला के अक्षरों के क्रम के ही अनुसार है। हाँ, दो महत्त्वपूर्ण अंतर हैं?

“वे क्या?”

“पहला अंतर तो यह है कि हिंदी वर्णमाला ‘अ’ से शुरू होती है मगर इस लोक का पहला खंड ‘अं खंड’ है। इसके बाद ‘अ खंड’, ‘आ खंड’, ‘इ खंड’ इत्यादि वर्णमाला के क्रम से ही आते हैं।”

“दूसरा अंतर क्या है?”

“हिंदी वर्णमाला में संयुक्ताक्षर क्ष, त्र, ज्ञ, श्र वर्णमाला के अंत में आते हैं। लेकिन हमारे शब्द लोक में ये उन वर्णों के अंत्याक्षर के साथ आते हैं।”

“बात पूरी तरह से समझ में नहीं आई”, चंद्रिका ने भोलेपन से कहा।

सब समझ जाओगी। बस इस राजमार्ग पर मेरे साथ आगे चलो।

फूलों का रथ अब राजमार्ग पर चलने लगा। एक ओर प्रकृति का अक्षत सौंदर्य था और दूसरी ओर शब्दों के भवन थे। पहला खंड ‘अं’ खंड था। फिर ‘अ’ खंड, ‘आ’ खंड, ‘इ’ खंड, ‘ई’ खंड आदि एक-एक कर आने लगे।

स्वर वर्णों से नामित आखिरी खंड ‘औ’ खंड था। फिर व्यंजन वर्ण से नामित पहला खंड ‘क’ खंड आ गया।



कुछ महत्त्वपूर्ण कोश

शब्दपरी बोली—“अब व्यंजन वर्णों से नामित खंड शुरू हो रहे हैं। इन खंडों की एक खास बात यह है कि ये उपखंडों में विभाजित हैं। खंड के भीतर के उपखंडों को व्यंजन पर लगी मात्रा द्वारा नामित किया जाता है।”

चंद्रिका फिर बोल पड़ी, “बात पूरी तरह समझ में नहीं आई।”

शब्दपरी ने समझाया, हमें व्यंजनों में आवश्यकतानुसार मात्राएँ भी लगानी होती हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए हमें व्यंजन नामित खंडों को मात्राओं के आधार पर उपखंडों में बाँटना होता है। अब ‘क’ खंड की ही बात लो। हम इसके सामने से अभी गुजर रहे हैं। देखो, पहला उपखंड ‘क’ है। इस उपखंड में ‘क’ से शुरू होने वाले ‘शब्दों’ के भवन हैं। पहले ‘कं’ फिर ‘क’ उपखंड, ‘का’ उपखंड इत्यादि एक-एक कर आते जाएँगे।

रथ आगे बढ़ रहा था। ‘क’ खंड के विभिन्न उपखंड एक-एक कर गुजरने लगे। ‘कं’, ‘क’, ‘का’, ‘कि’, ‘की’, ‘कु’, ‘कू’, ‘के’, ‘कै’ और ‘को’ उपखंडों से गुजरते हुए रथ ‘कौ’ उपखंड तक पहुँच चुका था। तभी चंद्रिका के मन में एक सवाल उठा।

मेरी हमनाम जी, विभिन्न मात्राओं से नामित उपखंड तो नजर आए मगर वे सारे शब्द इस लोक में कहाँ निवास करते हैं जहाँ दो व्यंजन मिलकर संयुक्ताक्षर बनाते हैं। अभी हम ‘क’ खंड का नजारा देख रहे हैं। मगर ‘क्यारी’, ‘क्रंदन’, ‘क्रीड़ा’ इत्यादि शब्द तो नजर ही नहीं आए!

शब्दपरी बोली—यह तुमने अच्छा सवाल उठाया। हमारे लोक में इसके भी निश्चित नियम हैं। अब ‘क’ खंड की ही बात लो। ‘कं’ उपखंड से चलते-चलते हम ‘कौ’ उपखंड तक पहुँच चुके हैं। इसके बाद संयुक्ताक्षर का उपखंड शुरू होगा।

शब्दपरी ने सच ही कहा था। ‘कौ’ उपखंड के तुरंत बाद ‘क’ उपखंड शुरू हो गया। ‘क्या’,

‘क्यारी’, ‘क्यों’, जैसे शब्द आने लगे।

शब्दपरी बोल पड़ी, “मैंने तुम्हें कुछ देर पहले बताया था कि ‘क्ष’ ‘त्र’ ‘श्र’ जैसे वर्णों से शुरू होने वाले शब्द इन वर्णों के प्रथमाक्षर के साथ आते हैं।”

चंद्रिका ने याद करते हुए कहा, “हाँ और आपकी बात मेरी समझ में नहीं आई थी।” शब्दपरी समझाने की मुद्रा में बोली, “देखो, अब ‘क्ष’ का ही उदाहरण लो। यह ‘क’ और ‘ष’ के योग से बना हुआ संयुक्ताक्षर है। इस संयुक्ताक्षर का पहला अक्षर यानी प्रथमाक्षर ‘क’ है अतः यह इसी उपखंड में आगे जाकर है।”

रथ की यात्रा जारी थी। चंद्रिका ने ध्यान दिया कि ‘क’ प्रथमाक्षर से शुरू होने वाले शब्द एक-एक कर सामने से

ध्यान देने योग्य बातें

- ▶ शब्दकोश, शब्दों का खजाना है। इसमें एक भाषा-भाषी समुदाय में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को संचित किया जाता है।
- ▶ शब्दकोश में शब्दों की व्युत्पत्ति, म्रोत, लिंग, शब्द-रूप एवं विभिन्न संदर्भपरक अर्थों के बारे में जानकारी दी जाती है।
- ▶ हिंदी शब्दकोश में हिंदी वर्णमाला का अनुसरण किया जाता है परंतु अं से प्रारंभ होने वाले शब्द सबसे पहले दिए जाते हैं।
- ▶ यद्यपि हिंदी वर्णमाला में कुछ संयुक्त व्यंजन सबसे अंत में आते हैं परंतु शब्दकोश में उन्हें उस क्रम में रखा जाता है जिन व्यंजनों से मिलकर वे बने हैं, जैसे क्+ष=क्ष, ज्+ञ=ञ, त्+र=त्र, श्+र=श्र।
- ▶ स्वर रहित व्यंजन से प्रारंभ होने वाले शब्द उस व्यंजन में इस्तेमाल होने वाले सभी स्वरों के बाद में रखे जाते हैं, जैसे ‘क्या’ शब्द ‘कौस्तुभ’ के बाद ही आएगा।

गुजर रहे थे। क्रम वर्णमाला का ही था। हाँ, वे दो नियम भी लागू हो रहे थे, जो शब्दपरी ने शुरू में बताए थे। ‘क’ और ‘य’ से मिलकर बने संयुक्ताक्षरों से शुरू होने वाले शब्दों से आगे बढ़ते हुए दोनों ‘क’ और ‘र’ से बने संयुक्ताक्षर ‘क्र’ से शुरू होने वाले शब्दों के भवन आए। ‘क्रंदन’ और ‘क्रंदित’ के बाद ‘क्र’ का नंबर आया और ‘क्रम’, ‘क्रमशः’ इत्यादि शब्दों के भवन आए। फिर ‘क्रा’, ‘क्रि’ इत्यादि से प्रारंभ होने वाले शब्दों के भवन आते गए।

‘क्र’ के बाद ‘क्ल’ एवं ‘क्व’ से शुरू होने वाले शब्द आए। फिर शुरू हुआ ‘क्ष’ से प्रारंभ होने वाले शब्दों के भवनों का सिलसिला। यह इस लोक के नियमों के अनुसार ही था चूँकि ‘क्ष’ संयुक्ताक्षर ‘क’ और ‘ष’ से मिलकर बना है अतः इसे ‘क’ और ‘व’ से मिलकर बने ‘क्व’ संयुक्ताक्षर से शुरू होने वाले शब्दों के बाद ही आना था।

चंद्रिका खुश होकर बोली—“अब बात मेरी समझ में आ गई। इसका अर्थ यह हुआ कि चूँकि ‘त्र’ संयुक्ताक्षर ‘त’ और ‘र’ वर्णों से मिलकर बना है, अतः इससे शुरू होने वाले शब्दों के भवन ‘त’ खंड में नियमानुसार निर्धारित स्थलों पर आएँगे।”

शब्दपरी प्रशंसा भाव से मुसकराई—“हाँ, बिलकुल ठीक। ‘ज्ञ’ संयुक्ताक्षर ‘ज’ और ‘ज’ वर्णों के संयोग से बना है। अतः इससे प्रारंभ होने वाले शब्दों के भवन ‘ज’ खंड में अपने निर्धारित स्थानों पर आएँगे। ‘श्र’ संयुक्ताक्षर ‘श’ और ‘र’ वर्णों से मिलकर बना है। अतः इससे शुरू होने वाले शब्दों के निवास स्थल ‘श’ खंड में होंगे।”

रथ चलता जा रहा था। थोड़ी देर में ‘च’ खंड आ गया। इस लोक के नियमों के हिसाब से पहले ‘च’ उपखंड आया। चंद्रिका खुशी से चिल्ला पड़ी। शब्दपरी बोली—“लो, तुम्हारा उपखंड तो आ गया। तुम्हारा घर तो इसी उपखंड में होगा।”

“बिलकुल ठीक”—थोड़ी ही देर में इस राजमार्ग के किनारे मेरा घर आने वाला है।”

‘च’ उपखंड में निवास करने वाले शब्दों के भवन एक-एक कर आते जा रहे थे। पहले उन शब्दों के भवन थे जिनका दूसरा वर्ण ‘क’ से शुरू होता था। यानी यहाँ भी नियम वही था जो पहले वर्ण के लिए था।

धीरे-धीरे उन शब्दों के भवन आए जिनका दूसरा वर्ण ‘द’ था। ‘चंदन’, ‘चंदेल’ इत्यादि शब्दों के बाद ‘द’ और ‘र’ के संयुक्ताक्षर ‘द्र’ का नंबर आया। इस क्रम का पहला शब्द ‘चंद्र’ था।

संदर्भ-ग्रंथ

- ▶ जिस प्रकार ‘शब्दकोश’ में शब्दों के अर्थ दिए होते हैं उसी प्रकार ‘संदर्भ-ग्रंथों’ में मानव द्वारा सचित ज्ञान को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
- ▶ संदर्भ-ग्रंथ कई प्रकार के होते हैं संदर्भ-ग्रंथ का सबसे विशद रूप ‘विश्व ज्ञान कोश’ है। इसमें मानव द्वारा सचित हर प्रकार की जानकारी और सूचना का संक्षिप्त संकलन होता है।
- ▶ संदर्भ-ग्रंथों के अन्य महत्वपूर्ण प्रकार हैं ‘साहित्य कोश’ और ‘चरित्र कोश’ ‘साहित्य कोश’ में साहित्यिक विषयों से संबंधित जानकारियाँ संकलित होती हैं। ‘चरित्र कोश’ में साहित्य, संस्कृति, विज्ञान आदि क्षेत्रों के महान व्यक्तियों के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में जानकारी संकलित होती है।
- ▶ संदर्भ-ग्रंथ गागर में सागर के समान हैं। जब भी किसी विषय पर तुरंत जानकारी की आवश्यकता होती है, संदर्भ-ग्रंथ हमारे काम आते हैं।
- ▶ संदर्भ-ग्रंथों में जानकारियों का सिलसिलेवार संकलन ‘शब्दकोश’ के नियमों के अनुसार ही होता है।

फिर नियमानुसार इन शब्दों के भवन आए जिनका दूसरा वर्ण ‘द्रा’ था। ‘चंद्रा’ ‘चंद्रायण’ इत्यादि शब्दों के बाद ‘द्रि’ की बारी आते ही नियमानुसार पहले ‘चंद्रिकांबुज’ और फिर ‘चंद्रिका’ का भवन आ गया। भवन के बाहर ‘चंद्रिका’ की पट्टिका को देखकर चंद्रिका का खुशी से उछलना स्वाभाविक था।

रथ अब तेज़ी से दौड़ने लगा। थोड़ी ही देर में ‘व’ खंड आ गया। इस खंड के उपखंड एक-एक कर गुज़रने लगे। ‘वि’ उपखंड के आते ही चंद्रिका का उतावलापन बढ़ने लगा। इस लोक के नियमों द्वारा निर्धारित क्रम के अनुसार थोड़ी देर में ‘विदग्ध’ शब्द का भवन भी आ गया।

शब्दपरी ने रथ रोका। दोनों रथ से उतरकर भवन के दरवाजे पर पहुँचे। वहाँ ‘विदग्ध’ की पट्टिका लगी थी। इस पट्टिका के नीचे संगमरमर की एक और बड़ी पट्टिका थी।

जिज्ञासावश चंद्रिका पट्टिका के सामने रुक गई और लिखी इबारत को पढ़ने लगी।

विदग्ध- वि.(सं.) नागर; निपुण; पंडित; रसिक; रसज्ज; जला हुआ; जठराग्नि से पका हुआ; पचा हुआ; नष्ट; गला हुआ; जो जला या पचा न हो; सुंदर; भद्रतापूर्ण। पु. चतुर या धूर्त आदमी; रसिक; एक घास।

शब्दपरी बोली, “इस लोक में हर भवन के बाहर यह संगमरमर की पट्टिका होती है जिस पर ‘शब्द’ का परिचय होता है। यह ज़रूरी है कि शब्द से मिलने और मित्रता करने के पहले तुम उसके बारे में पहले से ही जान लो।”

चंद्रिका ने कहा—“शब्दपरी तुमने शब्द के अर्थ को लेकर तो मेरी समस्या सुलझा दी। मैं देख रही हूँ कि विदग्ध शब्द के कई अर्थ दिए हुए हैं। किसी लेखन में जहाँ जैसा संदर्भ होगा वहाँ वैसा ही अर्थ लागू होगा। मगर एक बात समझ में नहीं आई।”

“वह क्या?”

“संगमरमर की पट्टिका पर कुछ संकेताक्षर भी लिखे हैं। उनके अर्थ क्या हैं?”

शब्दपरी बोली—“वि. का अर्थ यह है कि विदग्ध एक विशेषण है। पु. से यह अभिप्राय है कि यह शब्द पुंलिंग है। (सं.) से यह मतलब निकलता है कि विदग्ध संस्कृत का शब्द है।”

चंद्रिका अब विदग्ध के बारे में पूरी तरह से जान चुकी थी और उससे मिलने के लिए उत्सुक हो रही थी। शब्दपरी ने द्वार की घंटी बजाई। दरवाजा खुलने पर एक सुदर्शन व्यक्ति सामने दिखाई पड़ा। यही विदग्ध था। अपने मेहमानों का स्वागत करते हुए वह उन्हें घर के अंदर ले गया।

“विदग्ध, यह है पृथ्वी की मेरी हमनाम—चंद्रिका। तुमने इसे बहुत परेशान किया है”—शब्दपरी बोली।

विदग्ध ने जवाब दिया, “कोई बात नहीं—मैं इनसे माफ़ी माँगता हूँ। मगर इस बहाने इन्होंने हमारे लोक को तो देख लिया।”

चंद्रिका बोली—“नहीं—नहीं, कोई बात नहीं, सच कहूँ तो वह परेशानी ही वरदान साबित हुई।”

विदग्ध ने कहा—“आगे आपको हमारे किसी भी साथी से कोई परेशानी नहीं होगी।”

फिर विदग्ध ने एक मोटी पुस्तक निकाली और चंद्रिका को देते हुए बोला, “आप इसे मेरी तरफ से उपहार के रूप में रख लीजिए। यह इस लोक की निर्देशिका है। इसे ‘शब्दकोश’ कहते हैं।”

चंद्रिका ने इस पुस्तक के पन्ने पलटे। प्रारंभ के दो पृष्ठों पर एक ‘संकेत सूची’ थी। इसमें संगमरमर पट्टिका पर प्रयुक्त होने वाले संकेतों के अर्थ दिए गए थे जैसे ‘पु.-पुलिंग’, ‘स्त्री-स्त्रीलिंग’ इत्यादि।

संकेत-सूची

*—पद में प्रयुक्त	(ज्यो०) — ज्योतिष
+—स्थानिक	(तं०) — तंत्रज्ञास्त्र
अ०—अव्यय	(ति०) — तिव्वती
(अ०) — अरबी	(तिर०) — तिरस्कार-सूचक
अ० कि०—अकर्मक क्रिया	(तु०) — तुर्की
(अप्र०) — अप्रचलित	दीनद०—दीनदयाल गिरि
अमर०—अमरबेल (वृंदावनलाल वर्मा)	दे०—देखिये
अल्प०—अल्पसूचक, (लघु रूपसूचक)	नागरी०—नागरीदास
अहिल्या—(वृंदावनलाल वर्मा)	(ना०) — नाटक
(आ०) — आधुनिक	(न्या०) — न्याय
(आयु०), (आ० वे०) — आशुवैद	प०—पदावत, जायसी-हृत
(इ०) — इत्यादि	(पह०) — पहलवी
(इ०), (इब०) — इबरानी	(पा०) — पात्री
(उ०) — उदाहरण	(पाराशरसं०) — पाराशरसंहिता
उप०—उपसर्ग	पु०—पुर्लिङ
(उपनि०) — उपनिषद्	(पु०) — पुराण
कवि०—कौ०—कविताकौमुदी (रामनरेश त्रिपाठी)	(पुत०) — पुतंगाली
(का०) — कानून	प्र०—प्रत्यय
(काम०) — कामदंकीय या कामशास्त्र	(प्रा०) — प्राचीन
(कौ०) — कौटिल्य	(फा०) — फारसी
(क्व०) — क्वचित्	(फें०) — फेंच
(ग०) — नगित	(बं०) — बंगाली
(गी०) — गीता	(ब०) — बर्मी
गीता०—गीतावली, तुलसी-हृत	(बह०), (बहव०) — बहवचन
गुलाब०—गुलाबराय-हृत नवरस	बि०—बिहारी रत्नाकर
ग्राम०—ग्रामगीत, रामनरेश त्रिपाठी	बी०—बीसलदेव रासो
(ग्रा०) — ग्राम्य	बुदेल०—बुदेलखड़ी बोली
घन०—घन आनन्द ग्रन्थावली	(बृ० सं०) — बृहत्संहिता
चंदा०—चंदायन	(बो०), (बोल०) — बोल-चाल
(चि०) — चित्रकारी	(बौ०, बोढ०) — बौद्धसाहित्य
छत्तीस०—छत्तीसगढ़ी बोली	(भाग०) — भागवत
छत्र०—छत्रप्रकाश	भाववि०—भावविलास देव-हृत
(ज०) — जरमन	भू०, भूषणग्रन्थावली
जिदगी०—जिदगी मुसकरायी—कन्हैयालाल प्रभाकर	भू० कि०—भूतकालिक क्रिया
(जै०) — जैन साहित्य	(मति०) — मतिराम
(ज्या०) — ज्यामिति	(मनु०) — मनुस्मृति

४६७	उत्तरण—उत्थान
<p>बादि); ‘उत्तरदिनांकित’। —०धनादेश—५० (पोस्ट डेटेड चेक) वह घनादेश जिसपर बादकी तिथि बाल की गयी ही अतः जिसका भुगतान तुरंत न होकर उक्त तिथिको ही या उसके बाद संभव हो सके। —जाता(तु),—बायक—वि० जवाब देनेवाला, जिम्मेदार; मृष्ट। —बायिक—५० जवाबदेही। —बायी(चिन)। —वि० जवाब देनेवाला, जिम्मेदार। —नाखि—स्त्री० यथामें उत्तर दियामें बना कुंड। —यक्ष—५० बाद या बहसका जवाब; सिद्धांत-पक्ष। —घट—५० दुष्ट, चादर। —यथ—५० उत्तरका रास्ता; देवयान। —यद—५० समाजका अतिम पद। —याद—५० दावेका जवाब। —प्रस्तुत्यस्त्र—५० सवाल-जवाब, बहस-दृज्जन। —प्रायम्, —भोग्य—वि० (दिव्याननी) जो बावमें, प्रायः भूत्युके उपरात, दिया जाय; जो प्राय ही जाने पर भी तुरंत न दिया जाकर पूरी व्याधि समाप्त हो जाने पर या भूत्यु हो जाने पर ही मिले। —श्रोत्यवदा—स्त्री० उत्तर आदिपदा नामन। —मंद्रा—स्त्री० संसीतके स्वरका एक प्रकार। —मीमांसा—५० बोंदात दर्शन। —रामचरित—५० भवमूलि-रचित संख्यतका एक प्रसिद्ध नाटक। —स्वरण—५० उत्तर, जवाबके लक्षण। —वय—स्त्री० बुढ़ापा। —वयस्त्र—५० (हिं०) बुढ़ापा। —वृत्ति—स्त्री० एक तत्त्वकी छोटी विचकारी। —वस्त्र—५० ऊपर पहननेका वस्त्र; दुष्ट। उपरन। —वादमें—(विन्)—५० प्रतिवादी, मुद्दालेह; बावमें, पीछे फरियाद करनेवाला। —विचार—५० (आपटर थॉट) बादमें उठा हुआ (मनमें आया हुआ) विचार, प्रश्नविचार। —साक्षी(विन्)—५० सुनी हुई बात कहनेवाला गवाह; प्रतिवादिपक्षका गवाह। —साधक—वि० शेषांशको पूरा करनेवाला; जवाबको राखित करनेवाला। —उत्तरण—५० (सं०) पार होना; उत्तरना; पानीसे निकलना।</p> <p>बैठनेकी एक मुद्रा। —यवक—५० रस्त एंड। —याद—वि० जिसकी टाँगे फैला दी गयी हैं। ५० स्वारंभुव मनुका जुब जो धूखका पिता था; परमेश्वर। —० अ—५० धूखतारा; धूब। —यथ—वि० चित लेटा हुआ। ५० दुष्टमूहा बच्चा। —हृदय—वि० खुले या सफ दिलवाला।</p> <p>उत्तानित—वि० (सं०) ऊपर उठाया या फैलाया हुआ (मुख)।</p> <p>उत्ताष्ठ—५० (सं०) तेज गरमी या आँच; द्रुख; क्लेश; चिता; थोभ; उत्तेजना; शक्ति; प्रयास। —मार्पि—५० (पाइरोमीटर) ऐसे तापमापी जो अति उच्च तापको नापनेके काम आते हैं। (जैसे प्रकाशीय उत्तापमापी, आस्टिकल पाइरोमीटर, द्वारा सूर्यकी सतहका ताप (६००० डिग्री सेन्टीग्रेड) नापा जा सकता है। विद्युत-उत्तापमापी द्वारा लगभग १००० डिग्री तकका ताप नाप सकते हैं।)</p> <p>उत्तानित—वि० (सं०) गरम किया हुआ; पीड़ित; उत्तेजित किया हुआ।</p> <p>उत्तापी(चिन)—वि० (सं०) उत्तापयक्त।</p> <p>उत्तर—वि० (सं०) औरोसे बढ़ जानेवाला, श्रेष्ठ। ५० उद्धार; मृक; बमर; अस्थिरता; प्रयाण; पार के जाना; तटपर उत्तरना।</p> <p>उत्तरण—वि० (सं०) उद्धारक, तानेवाला। ५० शिव।</p> <p>उत्तरण—५० (सं०) पार उतारना; उद्धार करना; विण।</p> <p>उत्तारी(रिन्)—वि० (सं०) पार करनेवाला; अस्थिर; पर्सिवर्न-शील; अस्वरूप।</p> <p>उत्तरण—वि० (सं०) पार करने योग्य; बमन करने योग्य।</p> <p>उत्ताल—वि० (सं०) ऊचा; प्रबल; प्रचंड; भयंकर; विशाल;</p>	<p>जिसकी टाँगे फैला दी गयी हैं। ५० स्वारंभुव मनुका जुब जो धूखका पिता था; परमेश्वर। —० अ—५० धूखतारा; धूब। —यथ—वि० चित लेटा हुआ। ५० दुष्टमूहा बच्चा। —हृदय—वि० खुले या सफ दिलवाला।</p> <p>उत्तानित—वि० (सं०) ऊपर उठाया या फैलाया हुआ (मुख)।</p> <p>उत्ताष्ठ—५० (सं०) तेज गरमी या आँच; द्रुख; क्लेश; चिता; थोभ; उत्तेजना; शक्ति; प्रयास। —मार्पि—५० (पाइरोमीटर) ऐसे तापमापी जो अति उच्च तापको नापनेके काम आते हैं। (जैसे प्रकाशीय उत्तापमापी, आस्टिकल पाइरोमीटर, द्वारा सूर्यकी सतहका ताप (६००० डिग्री सेन्टीग्रेड) नापा जा सकता है। विद्युत-उत्तापमापी द्वारा लगभग १००० डिग्री तकका ताप नाप सकते हैं।)</p> <p>उत्तानित—वि० (सं०) गरम किया हुआ; पीड़ित; उत्तेजित किया हुआ।</p> <p>उत्तापी(चिन)—वि० (सं०) उत्तापयक्त।</p> <p>उत्तर—वि० (सं०) औरोसे बढ़ जानेवाला, श्रेष्ठ। ५० उद्धार; मृक; बमर; अस्थिरता; प्रयाण; पार के जाना; तटपर उत्तरना।</p> <p>उत्तरण—वि० (सं०) उद्धारक, तानेवाला। ५० शिव।</p> <p>उत्तरण—५० (सं०) पार उतारना; उद्धार करना; विण।</p> <p>उत्तारी(रिन्)—वि० (सं०) पार करनेवाला; अस्थिर; पर्सिवर्न-शील; अस्वरूप।</p> <p>उत्तरण—वि० (सं०) पार करने योग्य; बमन करने योग्य।</p> <p>उत्ताल—वि० (सं०) ऊचा; प्रबल; प्रचंड; भयंकर; विशाल;</p>

इसके बाद ‘अ’, ‘आ’ इत्यादि हर खंड में निवास करने वाले शब्दों की सूची थी। इन शब्दों को इस पुस्तक में ठीक उसी प्रकार सजाया गया था जैसे राजमार्ग के किनारे भवनों को क्रमवार निर्मित किया गया था। वही वर्णमाला क्रम और वे ही दो महत्त्वपूर्ण नियम। लेकिन चंद्रिका ने एक बात और देखी। इस पुस्तक के हर पृष्ठ के शीर्ष पर दो शब्दों का जोड़ा दिया हुआ था। जैसे ‘उत्तरण-उत्थान’, ‘जड़-जन’ आदि।

“इसका क्या उद्देश्य है?” चंद्रिका ने पूछा।

विदग्ध बोला, “यह हमारे साथियों की तलाश को आसान बनाता है। हर पृष्ठ के ऊपर दिए गए शब्द युग्म का पहला शब्द उस पृष्ठ का पहला शब्द होता है। दूसरा शब्द पृष्ठ के आखिरी शब्द को दर्शाता है। इस प्रकार पूरे पृष्ठ पर किसी शब्द को तलाशने की ज़रूरत नहीं होती, शब्द-युग्म को देखकर ही पता चल जाता है कि इस पृष्ठ पर इच्छित शब्द का होना संभव है या नहीं।”

विदग्ध को चंद्रिका ने धन्यवाद दिया। फिर दोनों बाहर निकले।

“चलो मैं तुम्हें वापस छोड़ दूँ”—शब्दपरी ने कहा।

फूलों का रथ एक बार फिर हवा में उड़ रहा था।

वापसी यात्रा के दौरान चंद्रिका ने देखा कि रथ किसी और लोक के ऊपर से गुजर रहा है।

“यह कौन-सा लोक है?”

“जैसे हमारा ‘शब्दलोक’ है वैसे ही इस लोक को विश्वज्ञान लोक कहते हैं।”

“हाँ, यहाँ भी वैसा ही राजमार्ग है और वैसे ही मार्ग के एक तरफ भवन बने हुए हैं”—चंद्रिका ने कहा।

शब्दपरी बोली, “विश्वज्ञान लोक में भी भवनों को उसी प्रकार क्रमवार व्यवस्थित किया गया है, जिस प्रकार हमारे शब्दलोक में। अंतर यह है कि हमारे यहाँ ‘शब्द’ निवास करते हैं और इस लोक में ‘जानकारियों’ का निवास है।”

“क्या मतलब?”

मतलब यह कि तुम्हें मानव ज्ञान से संबंधित जो भी सूचना या जानकारी चाहिए वह इस लोक के निवासियों से मिल जाएगी। शब्दपरी आगे बोली, “इस लोक की निर्देशिका विश्वज्ञान कोश के नाम से जानी जाती है।”

चंद्रिका यह जानकर बड़ी खुश हुई। अब जब उसे किसी विषय पर संक्षिप्त जानकारी की ज़रूरत होगी तो उसे ज्यादा भटकना नहीं पड़ेगा। एक ही स्थान पर उसे हर विषय की संक्षिप्त जानकारी मिल जाएगी।

रथ अब किसी अन्य लोक के ऊपर से उड़ रहा था। शब्दपरी बोली, “यह चरित्र-लोक है। यहाँ भी जानकारियाँ ही निवास करती हैं। अंतर यह है कि ये जानकारियाँ विचारकों, साहित्यकारों, वैज्ञानिकों आदि के संक्षिप्त परिचय और उपलब्धियों तक ही सीमित रहती हैं। जानकारियों को क्रमवार रूप से व्यवस्थित करने का नियम हमारी तरह ही है।”

“यानी जब भी मुझे किसी भी क्षेत्र के महान व्यक्ति के बारे में जानना होगा तो मेरी मदद इस लोक के निवासी करेंगे।”

“हाँ चंद्रिका, यह भी जान लो कि यहाँ निर्देशिका को व्यक्ति कोश या चरित्र कोश कहते हैं।”

थोड़ी देर में एक और लोक आया। शब्दपरी ने बताया कि यह ‘साहित्य लोक’ है। यहाँ साहित्य से संबंधित विषयों की जानकारियाँ निवास करती हैं। इस लोक की निर्देशिका साहित्य कोश कही जाती है।

“मैं समझती हूँ जानकारियों के क्रमबद्ध प्रस्तुतिकरण का नियम इस लोक में भी वही होगा।”

“हाँ चंद्रिका, बिलकुल ठीक”— शब्दपरी बोली। रथ अब पृथ्वी के निकट पहुँच रहा था।

थोड़ी देर में चंद्रिका का घर आ गया। चंद्रिका को वापस छोड़ने के बाद शब्दपरी फिर छाया में बदल गई और धीरे-धीरे विलीन हो गई। चंद्रिका की अचानक आँख खुली। तो क्या सब कुछ सपना था? मगर सामने तो वही पुस्तक रखी थी। अगर सब कुछ सपना था तो वह पुस्तक आई कहाँ से? इसका रहस्य भी खुल गया। लता दीदी कमरे में आई।

“तुम्हारे जन्मदिन पर मैंने तुम्हें उपहार देने का वायदा किया था। तुम्हारा उपहार सामने है। पढ़ने में



तुम्हारी अभिरुचि को देखते हुए मैंने सोचा कि तुम्हारे लिए 'शब्दकोश' से बेहतर कोई उपहार नहीं हो सकता।"

"धन्यवाद दीदी। तुमने मेरे दिल की आवाज़ सुन ली।" फिर वह लता दीदी से लिपट गई।

पाठ से संवाद

1. नीचे दिए गए कथनों को पूरा कीजिए।
(क) शब्दकोश न केवल शब्दों के अर्थ बताता है बल्कि...
(ख) शब्दकोश में शब्दों का क्रम...
(ग) शब्दकोश का सबसे बड़ा लाभ यह है कि...
2. नीचे दिए गए शब्दों को शब्दकोशीय क्रम में लिखिए—
परीक्षण, परिक्रमण, परिक्रम, विश्वामित्र, हिमाश्रया, हृदयंगम, ग्वालिन, घंटा, योगांत, घटक, घट, इच्छित, इक्षु, अंतः, अंकपित, आवृष्टि, उदाहन, उद्योग, जिज्ञासु

अर्थ है वह खाली जगह भी
जो शब्दों के बीच होती
जिसमें उज्ज्वलता भरते ही
शब्द जगमगाने लगते
—कुंवर नारायण
हिंदी कवि

परिशिष्ट-1

(क) नए शब्द

अपडेटिंग—विभिन्न वेबसाइटों पर उपलब्ध सामग्री को समय-समय पर संशोधित और परिवर्धित किया जाता है। इसे ही अपडेटिंग कहते हैं।

ऑफिंस—जनसंचार माध्यमों के साथ जुड़ा एक विशेष शब्द। यह जनसंचार माध्यमों के दर्शकों, श्रोताओं और पाठकों के लिए सामूहिक रूप से इस्तेमाल होने वाला शब्द है।

ऑप-एड—समाचारपत्रों में संपादकीय पृष्ठ के सामने प्रकाशित होने वाला वह पत्रा जिसमें विश्लेषण, फ़ीचर, स्टंभ, साक्षात्कार और विचारपूर्ण टिप्पणियाँ प्रकाशित की जाती हैं। हिंदी के बहुत कम समाचारपत्रों में ऑप-एड पृष्ठ प्रकाशित होता है लेकिन अंग्रेजी के हिंदू और इंडियन एक्सप्रेस जैसे अखबारों में ऑप-एड पृष्ठ देखा जा सकता है।

डेडलाइन—समाचार माध्यमों में किसी समाचार को प्रकाशित या प्रसारित होने के लिए पहुँचने की आखिरी समय-सीमा को डेडलाइन कहते हैं। अगर कोई समाचार डेडलाइन निकलने के बाद मिलता है तो आमतौर पर उसके प्रकाशित या प्रसारित होने की संभावना कम हो जाती है।

डेस्क—समाचार माध्यमों में डेस्क का आशय संपादन से होता है। समाचार माध्यमों में मोटे तौर पर संपादकीय कक्ष डेस्क और रिपोर्टिंग में बँटा होता है। डेस्क पर समाचारों को संपादित किया जाता है तुसे छपने योग्य बनाया जाता है।

न्यूज़पेग—न्यूज़पेग का अर्थ है किसी मुद्रे पर लिखे जा रहे लेख या फ़ीचर में उस ताज़ा घटना का उल्लेख, जिसके कारण वह मुद्रा चर्चा में आ गया है। जैसे अगर आप माध्यमिक बोर्ड की परीक्षाओं में सरकारी स्कूलों के बेहतर हो रहे प्रदर्शन पर एक रिपोर्ट लिख रहे हैं तो उसका न्यूज़पेग सीबीएसई का ताज़ा परीक्षा परिणाम होगा। इसी तरह शहर में महिलाओं के खिलाफ़ बढ़ रहे अपराध पर फ़ीचर का न्यूज़पेग सबसे ताज़ी वह घटना होगी जिसमें किसी महिला के खिलाफ़ अपराध हुआ है।

पीत पत्रकारिता (येलो जर्नलिज़म)—इस शब्द का सबसे पहले इस्तेमाल उनीसर्वी सदी के उत्तरार्द्ध में अमेरिका में कुछ प्रमुख समाचारपत्रों के बीच पाठकों को आकर्षित करने के लिए छिड़े संघर्ष के लिए किया गया था। उस समय के प्रमुख समाचारपत्रों ने पाठकों को लुभाने के लिए झूठी अफ़वाहों, व्यक्तिगत आरोप—प्रत्यारोपों, प्रेम संबंधों, भंडाफोड़ और फ़िल्मी गपशप को समाचार की तरह प्रकाशित किया। उसमें सनसनी फैलाने का तत्व अहम था।

पेज श्री पत्रकारिता—पेज श्री पत्रकारिता का तात्पर्य ऐसी पत्रकारिता से है जिसमें फैशन, अमीरों की पर्टीयों, महफिलों और जाने-माने लोगों (सेलीब्रिटी) के निजी जीवन के बारे में बताया जाता है। यह आमतौर पर समाचारपत्रों के पृष्ठ तीन पर प्रकाशित होती रही है। इसलिए इसे पेज श्री पत्रकारिता कहते हैं। हालाँकि अब यह ज़रूरी नहीं है कि यह पृष्ठ तीन पर ही प्रकाशित होती हो लेकिन इस पत्रकारिता के तहत अब भी जोर उन्हीं विषयों पर है।

फ्रीक्वेंसी मॉड्यूलेशन (एफ.एम.)—रेडियो प्रसारण की एक विशेष तकनीक जिसमें फ्रीक्वेंसी को मॉड्यूलेट किया जाता है। रेडियो का प्रसारण दो तकनीकों के ज़रिये होता है जिसमें एक तकनीक एमप्लीच्यूड मॉड्यूलेशन (ए.एम.) है और दूसरा फ्रीक्वेंसी मॉड्यूलेशन (एफ.एम.)। एफ.एम. तकनीक अपेक्षाकृत नयी है और इसकी प्रसारण की गुणवत्ता बहुत अच्छी मानी जाती है। लेकिन ए.एम. रेडियो की तुलना में एफ.एम. के प्रसारण का दायरा सीमित होता है।

फ्रीलांस पत्रकार—फ्रीलांस पत्रकार से आशय ऐसे स्वतंत्र पत्रकार से है जो किसी विशेष समाचारपत्र या पत्रिका से जुड़ा नहीं होता या उसका कर्मचारी नहीं होता। वह अपनी इच्छा से किसी समाचारपत्र को लेख या फ़ोरेचर प्रकाशन के लिए देता है जिसके प्रकाशन पर उसे पारिश्रमिक मिलता है।

बीट—समाचारपत्र या अन्य समाचार माध्यमों द्वारा अपने संवाददाता को किसी क्षेत्र या विषय यानी बीट की दैनिक रिपोर्टिंग की जिम्मेदारी। यह एक तरह के रिपोर्टर का कार्यक्षेत्र निश्चित करना है। जैसे कोई संवाददाता शिक्षा बोट कवर या इंफोटेन्मेंट कहते हैं।

सीधा प्रसारण (लाइव)—रेडियो और टेलीविज़न में जब किसी घटना या कार्यक्रम को सीधा होते हुए दिखाया या सुनाया जाता है तो उस प्रसारण को सीधा प्रसारण (लाइव) कहते हैं। रेडियो में इसे आँखों देखा हाल भी कहते हैं जबकि टेलीविज़न के परदे पर सीधे प्रसारण के समय लाइव लिख दिया जाता है। इसका अर्थ यह है कि उस समय आप जो भी देख रहे हैं, वह बिना किसी संपादकीय काट-छाँट के सीधे आप तक पहुँच रहा है।

स्टिंग आपरेशन—जब किसी टेलीविज़न चैनल का पत्रकार छुपे टेलीविज़न कैमरे के ज़रिये किसी गैर-कानूनी, अवैध और असामाजिक गतिविधियों को फ़िल्माता है और फिर उसे अपने चैनल पर दिखाता है तो इसे स्टिंग आपरेशन कहते हैं। कई बार चैनल ऐसे आपरेशनों को गोपनीय कोड दे देते हैं। जैसे आपरेशन दुर्योधन या चक्रव्यूह। हाल के वर्षों में समाचार चैनलों पर सरकारी कार्यालयों आदि में भ्रष्टाचार के खुलासे के लिए स्टिंग आपरेशनों के इस्तेमाल की प्रवृत्ति बढ़ी है।

(ख) पाठ में आए तकनीकी शब्द

सरकारी पत्र व्यवहार	Official Correspondence
अर्धसरकारी पत्र	Deo Letter
अनुस्मारक	Reminder
कार्यालय आदेश	Office Order
कार्यालय ज्ञापन	Office Memorandum
परिपत्र	Circular
अधिसूचना	Notification
संकल्प	Resolution
प्रेस विज्ञप्ति	Press release
टिप्पणी	Note /Comment
प्रेषिती	Addressee
प्रेषक	Sender
पत्रांक	Letter Numbers
संलग्नक	Enclosure
अनुमोदन	Approval
अधोहस्ताक्षरी	Undersigned
सूचना	Notice
टिप्पण	Noting
प्रारूप	Draft
सक्षम अधिकारी	Competent Officer

पुस्तकालय एक कब्रगाह है/ जो मृत लोगों से
भरी पढ़ी है/ ये मृतलोग जिंदा हो सकते हैं
अगर तुम पुस्तकों के पन्नों को खोलो।

-रॉलफ वाल्डो इमर्सन
अमरीकी लेखक

परिशिष्ट-2

उपयोगी शब्दकोश

1. अंग्रेजी हिंदी कोश—फ्रादर कामिल बुल्के, एस. चाँद एंड कंपनी लिमिटेड, नयी दिल्ली।
2. उर्दू-हिंदी शब्दकोश—मुहम्मद मुस्तफ़ा खाँ मद्दाह, उ.प्र. हिंदी संस्थान, लखनऊ।
3. द न्यू पैंगिन इनसाइक्लोपीडिया—डेविड क्रिस्टल, पैंगिन बुक्स इंडिया लिमिटेड, नयी दिल्ली।
4. द पाकेट ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी—अंग्रेजी से अंग्रेजी ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, मुंबई।
5. मुहावरा कोश—बदरीनाथ कपूर-लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. राजपाल हिंदी शब्दकोश—डा. हरदेव बाहरी राजपाल एंड संस, दिल्ली।
7. वृहत् हिंदी कोश, ज्ञान मंडल, वाराणसी।
8. व्यावहारिक हिंदी—अंग्रेजी शब्दकोश—केंद्रीय हिंदी निदेशालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली।
9. संस्कृत-हिंदी कोश—वामन शिवराम आर्ट्स, नाग पब्लिशर्स, जवाहर नगर, दिल्ली।
10. समांतर कोश—अरविंद कुमार और कुसम कुमार, नेशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली।
11. हिंदी शब्द सागर, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी।
12. हिंदी साहित्य कोश (दो खंडों में)—प्रधान सं. डॉ. धीरेंद्र वर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी।

परिशिष्ट-3

कुछ प्रमुख वेबसाइटों के पते

www.jagran.com
www.amarujala.com
www.rashtriyasahara.com
www.bbchindi.com
www.hindustandainik.com
www.webdunia.com
www.bhaskar.com
www.navbharattimes.com
www.prabhatkhabar.com
<http://koshnr.tripod.com>
<http://users.panda.be/walter.rajesh>

शब्दकोश : संस्कृत, फ़ारसी, हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी

<http://sanskrit.gde.to/hindi/dict/eng-hin-itrans.html>
<http://aa241Is.aa.tufts.ac.jp/~tjun/sktdic>
www.aa.tufts.ac.jp/~kmach/hnd-la-e.htm
<http://www.ishipress.com/wordlist.htm>
<http://osQal.uchicago.edu/dictionaries/index.html>
<http://www.cs.wisc.edu/~navin/india/urdu.dictionary>

सरकारी और स्वायत्त संस्थान

<http://dol.nic.in/software.htm>
<http://hindinideshalaya.nic.in>
<http://www.sahitya-akademi.org>
<http://www.hindivishwa.nic.in/hindivishwa/welcome.html>
<http://rajbhasha.com/hindisansar/hinosQnsr.htm>

पोर्टल

<http://www.webuma.com>
<http://hindi.netjaal.com>
www.rediff.com

www.sify.com
www.prabhasakshi.com
<http://www.sahitya-akademi.org>

रेडियो / टी.वी.

http://www.bbc.co.uk/hi_ndi
<http://www.nic.in/indiapublications/Hindi-Pub/Reference/HR06.htm>
<http://www.ajktak.com>
<http://www.ddindia.net>

अखबार

<http://203.200.89.66:8080/Sahara>
<http://www.amarujala.com>
<http://www.bhaskar.com>
<http://www.naidunia.com>
<http://www.rajasthanpatrika.com>
<http://www.jagran.com>
<http://www.prabhatkhabar.com>
<http://www.hindimilap.com>
<http://www.bttlindia.com/mozilla>
<http://www.bridges.org/toolkit/freeIT.html#host>
<http://hindi3.tripod.com>.
<http://www.baraha.com/downloaosQ.htm>
<http://www.cs.colostate.edu/~malaiya/devafonts.htm>
<http://www.alanwood.net/unicode/devanagari.html>
<http://theory.tifr.res.in/bombay/history/people/language/hindi.html>
<http://www.aksharamala.com>
<http://www.ucl.ac.uk/~ucgadkw/indnet-textarchive.html>
<http://www.languageinindia.com>

207

साहित्यिक पत्रिकाएँ

<http://www.tadbhav.com>
<http://www.abhivyakti-hindi.org>
<http://www.aanubhuti-hindi.org>
<http://manaskriti.comlkaavyaalaya>
<http://hindi.india-today.com>
<http://www.womeninfoonline.com/hindi/intemet/index.asp>
<http://www.kalayan.org/kalayanpatrika/index.html>
<http://www.bharatdarshan.co.nzlstories/index.html>

विचार समूह

<http://groups.yahoo.com/group/HindiForum/messages/50?threaded=1>
<http://groups.yahoo.com/group/hindi/messages/359>
<http://groups.yahoo.com/group/subhaashitas>

स्रोत, संदर्भ और संसाधन

जरूरी वेब ठिकाना

<http://www.cs.colostate.edu/~malaiya/hindilinks.html>

उर्दू-हिंदी लिंक्स

<http://www.columbia.edu/~fp7/urduhindilinks.html>
<http://www.angelfire.com/sd/urdumedia/hind.html>
<http://babel.uoregon.edu/yamada/guides/hindiurdu.html>
www.urdustan.com

भाषाई कंप्यूटिंग : संसाधन/ प्रॉजेक्ट

<http://www.bharatbhasha.org.in/articles.htm>
http://www.acharya.iitm.ac.in/ind_fonts.html
<http://www.unicode.org/unicode/standard/translations/hindi.html>
<http://indic-computing.sou.rceforge.net>
<http://www.indlinux.org>
<http://www.yudit.org>
<http://www.ncst.ernet.in>
<http://www.iiit.net/ltrc/downloaosQ.htmlwww.cdac.org.in>
<http://www.mithi.com>
<http://users.skynet.be/hugocoolenslhindi/hindi.html>
<http://members.tripod.comlsbiswas/IWrite32/>